ॐ

भा. ३

भक्ति

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥



भावग्राहि त्रिगुणानां ज्ञानं गतेषु मुक्तानाम् ।
न ज्ञानं न च मोक्षः स्यात् तेषां जन्म शतैरपि ॥

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ॥

सम्पादकः—स्वामी कृष्णानन्द सरस्वती ।

मार्गशीर्ष सम्वत् १९८३ ॥

विषय सूची।

म्हाने पार उतारो जी थाने थारे निज भक्तांरी आन॥
हमरो अवगुन नेक न चितवो, अपनो ही कर जान॥१॥
काम क्रोध मद लोभ मोह वश, भूलो पद निर्वान
अवतो शरण गही चरणन की, मत दीजो मोहे मान
लख चौरासी भटकत २, मेरी पड़ी पिछान
भव सागर में बयो जात हूं, रखिये श्याम सुजान
हूं तो कुटिल अधम अपराधी ना सुमरो तेरो नाम
नरसी के प्रभु अधम उधारन, गावत वेद पुरान

ॐ

"कलौतु केवला भक्तिः"।

वार्षिक मूल्य २)

भक्ति

एक प्रति का ।)

जनता में भगवद्भक्ति भाव को जागृत करने वाली मासिक पत्रिका।

वर्ष १ } भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा, मार्गशीर्ष पूर्णिमा सं० १९८३। { अङ्क ३

॥ मंगलाचरणम् ॥

नौमीड्यतेभ्रूवपुषे तड़िदम्बराय। गुंजावतंस परिपिच्छल सन्मुखाय॥
वन्यसृजे कवलवेत्र विषाण वेणुः। लक्ष्मश्रये मृदुपते पशुपांगजाय॥१॥

स्तुत्यहं, नूतन सद्य सलिल भृत मेघ सदृश वपुधारी, पीत कौशेय रक्तोत्पल तुल्य दिव्यमान् मुखारविन्द, वनमाला विभूषिताङ्ग, आनन भृत वंशी, वक्षस्थल धृत कौस्तुभमणि, दयाद्रभाव, कमलनाभ जगदीश्वर के लिये हम प्रणाम करते हैं॥१॥

त्राहिमां सर्व लोकेश गतिरन्यान्न विद्यते।
सन्यस्तं मे जगन्नाथ पाहि मां मधुसूदन॥२॥

हे सर्व लोकेश! मेरा अन्य आश्रय नहीं है अतः मेरी रक्षा कर - हे मधु सदन! हे जगन्नाथ! मेरी पृथक् हुये हुये की रक्षा कर ॥२॥

त्राहिमां सर्व लोकेश वासुदेव सनातन।
सन्यस्तं मे जगद्योने पुंडरीकाक्ष मोक्षद ॥३॥

हे वासुदेव! हे सनात! हे सर्व लोकेश! मेरी रक्षा कर। हे पुण्डरीकाक्ष! हे मोक्षदायक! हे जगद्योने! मेरी पृथक हुए की रक्षा कर ॥३॥

सहस्र शीर्षं पुरुषं पुराणं अनादि मध्यान्त मनन्त कीर्तिम्।
शुक्रस्य धातार मजं च नित्यं पर परेशं शरणं प्रपद्ये ॥४॥

सहस्र शिर और आदि अन्त मध्य रहित, अनन्त कीर्ति, अजन्मा, अविनाशी इस पुराण पुरुष की शरण को प्राप्त होऊं ॥४॥

करचरण कृतं वा कायजं कर्मजं वा।
श्रवण नयनजं वा मानसं वा पराधं।
विहित मविहितं वा सर्व मेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥५॥

हाथों से, पैरों से, शरीर से, कर्म से, कानों से, नेत्रों से, तथा मन से किये हुए अपराधों को क्षमा कीजिये। हे दया के समुद्र महादेव जय हो! जय हो!! ॥५॥

भूः पादौ यस्य नाभिर्वियद सुरनिलश्चन्द्र सूर्यौ च नेत्रे
कर्णावाशाः शिरो द्यौ मुंख मपि दहनो यस्य वासोयमब्धिः।
अन्तःस्थं यस्य विश्वं सुरनरखगगो भोगिगन्धर्व दैत्यै
श्चित्रं रं रम्यते तं त्रिभुवन वपुषं विष्णुमीशं नमामि ॥६॥

पृथ्वी जिस के पैर हैं, अन्तरिक्ष नाभी है, सूर्य चन्द्रमा नेत्र हैं, दिशा कर्ण हैं, आकाश

शिर है, अग्नि मुख है, समुद्र वस्त्र है, जिसके अन्दर सारा विश्व स्थित है। सुर, देवता, मनुष्य, पक्षी सर्प गन्धर्व, दैत्यों के साथ जो बार २ रमण करता है उस तीन भुवन के वपु विष्णु को नमस्कार करता हूं ॥६॥

मेघश्यामं पीतकौशेय वासं श्रीवत्सांकं कौस्तुभोद्भासितांगम् ।
पुण्योपेतं पुण्डरी कायताक्षं विष्णुं वन्दे सर्व लोकैक नाथम् ॥७॥

नूतन मेघ के सदृश श्याम, पीत वस्त्र धारी, श्रीवत्स चिन्हवाले, कौस्तुभ मणि से प्रकाशित अङ्ग, पुण्य युक्त, कमल समान प्रफुल्लित नेत्र, सर्व लोक के नाथ विष्णु को प्रणाम करता हूं ॥७॥

सशंख चक्रं सकिरीट कुण्डलं सपीतवस्त्रं सरसी रुहेक्षणम् ।
सहार वक्षःस्थल कौस्तुभश्रियं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्।८।

शंख चक्र को धारण करने वाले, कीट कुण्डल को धारण करने वाले कमलेक्षण, पीत वस्त्र युक्त, वनमाला विभूषित वक्षस्थल, कौस्तुभ शोभा युक्त चतुर्भुज, श्रीविष्णुभगवान् को शिर से प्रणाम करता हूं ॥८॥

अचिन्त्य रूपो भगवान् निरंजनो विश्वम्भरो ज्योति मयश्चिदात्मा ।
न शोधितो येन हृदिक्षणं नो वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥९॥

अचिन्त्य रूप निरंजन विश्वम्भर, ज्योति स्वरूप, चिदात्मा को जिसने हृदय में धारण नहीं किया है उस मनुष्य का जीवन व्यर्थ ही है ॥९॥

नमः शिवाय गुरवे सच्चिदानन्द मूर्तये ।
निष्प्रपंचाय शान्ताय निरालम्बाय तेजसे ॥१०

सच्चिदानन्द मूर्ति, निष्प्रपंच शांत, तेजस्वरूप, सब के आश्रयभूत, शिव रूप गुरु के लिये प्रणाम हो ॥१०॥

जन्माद्यस्य यतोन्वया दितरश्चार्थेष्व भिज्ञः स्वराट् ।

तेन ब्रह्म हृदाय आदि कवये मुह्यन्ति यत् सूरयः ॥
तेजो वारि मृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गो मृषा ।
धाम्ना स्वेन सदा निरस्त कुहकं सत्यं परं धीमहि ॥११॥

सर्वज्ञ स्वतः सिद्ध ज्ञानवान् जिसने सब से पूर्व ब्रह्मा को उत्पन्न किया । उनके हृदय में वेदों का प्रकाश किया जो सत्य स्वरूप है जिसकी सत्यता से असत्य प्रपंच सत्य सा दीखता है जो माया रूपी कपट जाल से दूर है उस परमेश्वर का हम ध्यान करते हैं ॥११॥

गीत

(ले॰ सर रविन्द्र नाथ ठाकुर)

तेरी कृपा ।

तेरे अपरिमित दानों की वर्षा मेरे इन क्षुद्र हाथों पर (अहर्निशि) होती रहती है । युग के युग बीतते जाते हैं और तू उन्हें बराबर बर्षाता जाता है और यहां भरने के स्थान शेष ही रहता है ।

गान महिमा ।

तेरे जिन चरणों तक पहुंचने की आकांक्षा भी मैं नहीं कर सक्ता था उन्हें मैं अपने गीतों के दूर तक फैले हुये परों के किनारे से छू लेता हूं ।

गाने के आनन्द में मस्त हो कर मैं अपने स्वरूप को भूल जाता हूं और स्वामी को सखा पुकारने लगता हूं ।

मेरा संकल्प ।

हे जीवन प्राण, यह अनुभव करके कि मेरे सब अंगो में आप का सचेतन स्पर्श हो रहा है मैं अपने शरीर को सदैव पवित्र रखने का यत्न करूंगा ।

हे परम प्रकाश, यह अनुभव कर के कि आपने मेरे हृदय में बुद्धि के दीपक को जलाया है मैं अपने विचारों से समस्त असत्यों को दूर रखने का सदैव यत्न करूंगा ।

यह अनुभव कर के कि इस हृदय मन्दिर के भीतर आप विराजमान हैं मैं सब दुर्गुणों को अपने हृदय से निकालने और (आप के) प्रेम को प्रस्फुरित करने का सदैव यत्न करूँगा ।

यह अनुभव कर के कि तेरी ही शक्ति मुझे काम करने का बल देती है मैं अपने सब कामों में आप को व्यक्त करने का सदैव यत्न करूंगा ।

जीवन पुष्प -

इस नन्हें से पुष्प को तोड़ले और उसे

(अपने हाथ में) लेले विलम्ब न कर । मुझे डर है कि कहीं मुर्झा कर वह धूल में न गिर जाय ।

तेरी माला में चाहे उसे स्थान न मिले किन्तु अपने कर-कमल के स्पर्श से उस का मान तो कर और तोड़ ले । मुझे डर है कि कहीं मेरे जाने विना ही भेंट का समय न निकल जाय ।

यद्यपि इस का रँग गहरा न हो और इस की गन्ध हलकी ही हो, तिस पर भी इस पुष्प को अपनी सेवा में लगा ले और समय रहते रहते इसे तोड़ले ।

भूषण ।

आभूषण हमारा संयोग नहीं होने देते वे तेरे और मेरे बीच में आजाते हैं उन की झंकार से तेरी धीमी आवाज दब जाती है ।

तुम जिस बालक को राजकुमार के वस्त्रों से सजाते हो और जिस के गले में हार पहिनाते हो उस के खेल का सारा आनन्द नष्ट हो जाता है, उस के वसन-भूषण उस के प्रत्येक पद की गति को रोकते हैं । इस भय से कि कहीं वे घिस न जायं या धूल से मैले न हो जायं, वह अपने आप को सब से दूर रखता है और चलने फिरने से भी डरता है ।

हे मां ! यदि टीमटाम के तेरे बन्धन पृथिवी की स्वस्थ धूलि से किसी को अलग रखते हैं, यदि वे महान मानव जीवन के विराट हाट के प्रवेशाधिकार से किसी को वंचित करते हैं तो उन से कोई लाभ नहीं ।

प्रभु निष्ठा ।

अपने समस्त भारों को उस के हाथों में छोड़ दे जो सब सह सक्ता है, और दुःखी हो कर पीछे कभी नहीं देखता । जिस दीपक पर तेरी तृष्णा फूक मारती वह उस के प्रकाश को तुरन्त बुझा देती है ।

वह अपवित्र है, उस के अशुद्ध हाथों से कोई वस्तु ग्रहण मत कर । केवल उसी को स्वीकार कर जो पावन प्रेम द्वारा प्राप्त हो ।

जहाँ दीनातिदीन, नीचातिनीच और नष्ट भ्रष्ट निवास करते हैं वहां तेरे चरण विद्यमान हैं ।

जब मैं तुझे प्रणाम करने का उद्योग करता हूं मेरा प्रणाम उस गहराई तक नहीं पहुँच सक्ता जहां दीनातिदीन, नीचातिनीच और नष्ट भ्रष्टों के बीच में तेरे चरण विराजमान हैं ।

अहंकार की वहां तक गति ही नहीं है जहाँ दीनातिदीन, नीचातिनीच और नष्ट भ्रष्टों के बीच दरिद्रियों के वेष में तू

विचरता है।

मेरे मन को उस स्थान का मार्ग कभी नहीं मिल सक्ता जहां दीनातिदीन, नीचातिनीच और नष्ट भ्रष्टों के बीच में निःसंगियों के संग तू विद्यमान है।

सच्ची उपासना

इस पूजा पाठ, भजन, गान और माला के जाप को छोड़ सब द्वारों को बन्द कर के मन्दिर के एकान्त अन्धेरे कोने में तू किस की पूजा करता है ?

आंखें तो खोल और देख कि तेरा ईश्वर तेरे सामने नहीं है, वह तो वहाँ है जहां किसान कड़ी भूमि में हल चला रहा है और सड़क बनाने वाला पत्थर तोड़ रहा है। वह धूप और पानी में उन के साथ है और उस के कपड़े धूल से आच्छादित हो रहे हैं। तू अपने पवित्र वस्त्र को उतार डाल और उस के समान धूल भरी भूमि में उतर आ।

मुक्ति ! मुक्ति कहां मिल सक्ती है ? हमारे स्वामी ने स्वयं अपने आप को सृष्टि के बन्धनों में सहर्ष डाला है, वह हम सब के साथ सदा के लिए बन्धा है। ध्यान और समाधि (के जंजाल) से बाहर निकाल आ और धूप और पुष्पों को एक ओर छोड़ दे यदि तेरे कपड़े फट जायें और उन में धब्बे लग जायें तो हानि ही क्या है ? उस से मिल, उस के संग मेहनत कर और उस के साथ पसीना बहा।

दीर्घ यात्रा

मैं यात्रा के लिये प्रकाश की प्रथम किरण के रथ पर निकला था और ग्रहों और तारों में लोक लोकान्तरों में, वनों और पर्वतों में घूम फिर कर मैं अपने भ्रमण के चिन्ह छोड़ आया हूं सब से अधिक दूरी का मार्ग ही तेरे सब से निकट आ जाता है और वह शिक्षा सब से अधिक विषम या गूढ़ है जिस के द्वार पर पहुंचने के लिये प्रत्येक पराये द्वार को खटखटाना पड़ता है मेरे नेत्र दूर और निकट सब कहीं भटके तत् पश्चात् मैंने उन्हें मीच कर कहा "तुम कहां विराजमान हो।

प्रेम प्रतीक्षा

अन्त में प्रेम के कर-कमलों में आत्म-समर्पण करने के लिये केवल मैं उस की प्रतीक्षा कर रहा हूं। इसी से इतनी देर हुई है और इसी से इतनी त्रुटियां हुई हैं लोग अपने विधि-विधानों से मुझे जकड़ने के लिये आते हैं किन्तु मैं उन्हें सदा टाल देता हूं, क्योंकि मैं तो केवल प्रेम के कर-कमलों में आत्म-समर्पण करने के लिये उस की प्रतीक्षा कर रहा हूं।

भक्तियोग

(श्री० स्वामी राम कृष्ण परमहंस)

श्रीराम कृष्ण, अपने कमरे में एक छोटी चारपाई परबैठे हुये थे; वे पूर्ण रूप से समाधि मग्न थे। नीचे जमीन पर चटाइयां बिछी हुई थीं, उन पर शिष्य गण और दूसरे बाहर के लोग भी बैठे हुये थे। वे एक टक दृष्टि से महाराज की ओर देख रहे थे। महिमा चरण राम (दत्त), मनमोहन, नराई चैतन्य, एम इत्यादि भी वहीं बैठे थे - कुछ देर बाद नरेन्द्र भी वहां आ पहुंचा। वह इतवार का दिन था। उस दिन मार्च सन् १८८४ की पहली तारीख थी। दोल यात्रा उसी दिन लगने वाली थी। कुछ समयके बाद यद्यपि महाराज देहशुद्धिपर आने लगे और उनकी वाक् शक्ति भी जाग्रत होने लगी, तथापि उनकी वृत्ति तो केवल उसी परमानन्द में रंगी हुई थी। उन्होंने महिमा चरण को भक्ति का महात्म्य वर्णन करने तथा उसकी आवश्यकता बताने को कहा।

महिमा चरणः—एकसमय नारद मुनि के मन में तपश्चर्या करने की इच्छा उत्पन्न हुई कि:—

आराधितो यदि हरिस्तपसा ततः किम्
नाराधितो यदि हरिस्तपसा ततः किम् ॥
अन्तर् बहिर्यदि हरिस्तपसा ततः किम् ।
नान्तर् बहिर्यदि हरिस्तपसा ततः किम् ॥
विरम विरम ब्रह्मन् किं तपस्याशु वत्स ।
व्रज व्रज द्विज शीघ्रं शंकरं ज्ञानसिन्धुम् ॥
लभ लभ हरि भक्तिं वैष्णवोक्तां सुपक्वाम्
भव ।निगुड़निबन्धच्छेदिनी कर्तरीं च ॥

नारद मुनि अरण्य में एकान्त स्थान में तपश्चर्या कररहे थे कि इतने में उक्त आका, शवाणी उन्होंने सुनी—'यदि हरि की आराधना की जाय, तो फिर तपश्चर्या का प्रयोजन ही क्या है? अच्छा, यदि हरि की आराधना न की, तो फिर तपश्चर्या करनेसे मतलब ही क्या है? हरि अन्तर बाह्य है, यह सिद्धांत यदि में हृदय में जच जाय, तो फिर तपश्चर्या की क्या आवश्यकता है? इसलिये हे वत्स, बस होगया, अब तपश्चर्या में ही क्या अधिक रक्खा है? ज्ञान के सागर शंकर को जाकर मिल, और वैष्णवों ने जो हरि भक्ति बताई है उस सुपक्व हरि भक्ति को उनके पास से ले। एक भक्ति रूपी कैंची से संसारके सब दृढ़ बन्धन कटजांयगे।

महाराज—ईश्वर भक्ति दो प्रकार की है। भक्ति के एक प्रकार का नाम वैधी भक्ति है। नाना विधि के पूजोपचार, जप, पुरश्चरण यह सब इसी भक्ति के अङ्ग हैं। भक्ति का यह मार्ग शास्त्र द्वारा दिखाया गया है। इस वैधी भक्ति से समधि द्वारा ब्रह्म ज्ञान का लाभ होता है परमात्मा में जीवात्मा का लय हो

जाता है और ऐसा लय एक बार भी होजाने से फिर उसमें भिन्नता कभी नहीं होती । यही जीव योनि का, सामान्य जनों का मार्ग है

ईश्वर योनि के मनुष्यों की बात तो निराली है। इनकी भक्ति केवल औपचारिक ही नहीं रहती किन्तु आन्तरिक भी होती है उसका उगम अन्दर से होता है ? उसके फव्वारे तो आत्मा से ही उठते रहते हैं। चैतन्यादि अवतारी पुरुष समधि में ब्रह्म के साक्षात्कार का सुख अनुभव करते हैं । और उस परम पद से नीचे उतर कर मातृ-पितृ भाव से परमेश्वर की भक्ति करके भक्ति के दिव्य रस का भी आस्वादन करते हैं। " नेति नेति " कह कर वे सीढ़ियों की एक २ सीढ़ी चढ़ते जाते हैं और अन्त में एक दम शिखर पर जा पहुँचते हैं। शिखर पर पहुंच कर वे कहते हैं, यही वह है। तुरन्त कुछ देर बाद उनके ध्यान में आजाता है,कि शिखर भी ठीक उसी मसाले का बना हुआ है, जिससे कि सीढ़ियां बनाई गई हैं। दोनों का स्वरूप एक ही होता है ? फिर वे लोग कभी ऊपर कभी नीचे आते जाते हैं:—कभी तो वे शिखर पर आ बैठते हैं और कभी सीढ़ियों पर ही बैठे रहते हैं ?

शिखर तो समाधि की अवस्था में अनुभव में आने वाला ब्रह्म है, इन्द्रीय गोचर जगत् के अनुभव लेने वाले अहंकार का यहाँ नाम निशान भी नहीं रहता। बाह्य जग-नाम रूपात्मक सृष्टि यही सीढ़ी है, जब एक बार शिखर प्राप्त हो जाता है तब इस बात की भी प्रतीति होने लगती है कि ये सीढ़ियां मानो उस ब्रह्म ही के अनेक व्यक्त रूप हैं, जोकि इन्द्रियों को गोचर हो सकते हैं॥

एक समय शुकदेव समाधि मग्न थे वे निर्विकल्प, जड़समाधि में बिलकुल मग्न थे। इतने ही में नारद यह खबर लेकर आये कि आप परीक्षित को पुराण सुनाइये। शुकदेव जड़ पदार्थ के सदृश, बिलकुल बाह्य शून्य होकर बैठे थे। उस समय नारद ने अपनी वीणा का मधुर स्वर निकाल, चार श्लोकों में भगवत स्वरूप का प्रेम से वर्णन किया। पहिले श्लोक के सुनते ही उनकी आंखों में प्रेमाश्रु छागया । अन्तर्यामी चिन्मूर्ति उनके सन्मुख खड़ी होगई उन्हें उसके दर्शन का अनुभव होने लगा। अन्त में परमोच्चपद से नीचे आकर उन्होंने नारद से भाषण किया। शुकदेव जैसे ज्ञानी थे वैसे ही भक्त भी थे। वे ईश्वर योनी के थे। हनुमान को भगवान् के साकार तथा निराकार दोनों स्वरूपों का साक्षात्कार हो चुका था; तिस पर भी वे चिद्घन और आनन्द मूर्ति श्री रामचन्द्रजी का ध्यान करते थे। प्रहलाद और नारद की भी यही अवस्था थी। उन्हें ब्रह्म का साक्षात्कार होकर, सगुणरूप का दर्शन भी हो चुका था। कभी तो प्रहलाद 'सोऽहं' महावाक्य का अनुभव करता था; और कभी २ 'तू प्रभु' 'मैं दास' इसी भावना में तल्लीन रहता था ।

नारद तो सदा सर्वदा भक्ति-सुख में ही तैरते रहते थे। भक्ति का आश्रय करते ही संसार की सब चिन्ता छूट जाती है। जब तक मैं मैं कहने वाला अहंकार राक्षस जीवित रहता है, तब तक, पेट किस प्रकार भरेगा, यही चिन्ता मन को जलाती रहती है। क्या मुझे विषय रूप कीचड़ ही में पड़े रहना चाहिये ? नहीं; उस अहंकार को प्रभु का दास बना देना चाहिये, उस को इस संसार का अर्थात् विषयों का, दास बनने न देना चाहिये। "हे प्रभो ! तुम समर्थ हो, मैं तुम्हारा अनन्य दास हूं, अब मुझे संसार में न फँसाओ, सांसारिक सुखों से मेरा जी विरक्त हो गया है, मैं अब उस अतिशय सुख और अखण्ड आनन्द के उपभोग की लालसा कर रहा हूं ?,,

भक्त और संसार चिन्ता।

'मैं' शब्द ईश्वर के पास से दूर ही दूर खींचता ले जाता है; परन्तु 'मैं भक्त हूं' 'मैं ज्ञानी हूं' 'मैं दास हूं' 'मैं बालक हूं' इत्यादि भावनायें परमेश्वर के समीप पहुंचा देती हैं। शंकराचार्य ने अपना सात्विक अहंकार अर्थात् "मैं ज्ञानी हूं,, स्थिर रक्खा था, परन्तु वह अहंकार केवल लोक-कल्याण ही के लिये रक्खा गया था। बालकमें मैं-पनकी भावना संसार में अलिप्त रहती है अर्थात् उस का अन्तः करण संसार के किसी पदार्थ से नहीं होता किन्तु वह सर्वदा निर्मल बना रहता है। कभी २ बालक को क्रोध आजाता है; परन्तु वह एक क्षण में नष्ट भी हो जाता है। बालक अनेक २ प्रकार के खेल खेलता है, परन्तु एक २ क्षण में उन सब खेलों को वह भूल भी जाता है। अपने साथ खेलने वाले साथियों से गले से गला मिलाता है, अपने साथियों पर अत्यन्त प्रेम रखता है, परन्तु यदि उस के वे ही साथी कुछ रोज के लिये बाहर किसी ग्राम को चले जांय, तो उसे उन का विस्मरण हो जाता है और फिर नये नये २ बालकों से मिलना करता है। वह कभी आसक्त नहीं होता। वह सत्व, रज, तम में से किसी भीगुण में लिप्त नहीं रहता।

सामान्य मनुष्य को भक्ति का साधन क्यों करना चाहिये ? इस का एक और कारण है। वह यह है कि अहंकार का नाम निशान बिलकुल मिटाया नहीं जा सक्ता। बहुत विचार करने पर तुम कदाचित् उसे दबालो; परन्तु वह तो शिर उठाये विना रह ही नहीं सकता ग्रात २ में 'मैं मैं' कहने वाले अहंकार को तुम एक दम चिढ़कर छोड़ नहीं सक्ते।

चाहे जितना विचार करो, परन्तु 'मैं' कुछ तुम्हारा पीछा छोड़ने का नहीं। "मैं" तो कुम्भ के सदृश है और ब्रह्म अमर्याद सागर के सदृश है। वह कुम्भ इस सागर में, डुबाया हुआ है। विचार करने पर तुम्हारे

ध्यान में यह बात आजायगी कि घड़े के भीतर बाहर इधर उधर (सर्वत्र) पानी ही पानी है; परन्तु जब तक तुम विचार की कक्षा में हो तब तक यह घड़ा स्थिर ही रहेगा जब तक तुम विचार करते रहोगे तब तक तुम्हें यही मालूम होगा कि ब्रह्म उपाधि सहित है। यही "मैं,, जिसका नाश नहीं किया जासकता; सच्चा भक्त है। जब तक घड़ा अथवा अहंकार बना है तब तक "मैं,, भी उसी के बने रहेंगे। "तू परमेश्वर, मैं तेरा भक्त तू प्रभु, मैं तेरा दास, इत्यादि भावनायें सदा बनी रहेंगी। विचार की मर्यादा चाहे जितनी बढ़ा दी जाय, तो भी "मैं" का साथ कभी छूट नहीं सकता। हां, यदि घड़ा (अहंकार) नष्ट ही हो जाय तो बात जुदी है।

त्याग का प्रभाव।

(श्री० स्वामी राम तीर्थ)

संसार के उन सब देशों को जीतने के बाद, जो उसे ज्ञात थे, जबाब सिकंदर भारत को गया तो उसने विलक्षण भारत वासियों को, जिनकी चर्चा उसने बहुत सुनी थी, देखने की इच्छा प्रकट की। सिन्धु नदी के तट पर किसी साधु या आचार्य के पास लोग उसे ले गये। साधु बालू पर नंगे सिर नंगे पैर, नंगे बदन पड़ा हुआ है, और यह भी पता नहीं कि कल भोजन उसे कहां से मिलेगा। इस दशा में वह पड़ा हुआ घाम खा रहा है।

महान (आजम) सिकन्दर उसके निकट अपने पूरे गौरव से युक्त खड़ा हुआ है, ईरान से उसने जो जाज्वल्यमान रत्न और हीरे पाये थे उनसे जटित उसका मुकुट चम चमा रहा है, प्रकाश फैला रहा है। उसके निकट था विरक्त साधु। कितना अन्तर है, कितना भेद है? एक ओर तो सारे संसार का वैभव का प्रतिनिधि स्वरूप सिकन्दर का शरीर है और दूसरी ओर सारी गरीबी का प्रतिनिधि महात्मा है। किंतु इन दो सच्ची आत्माओं की गरीबी या अमीरी के यथार्थ ज्ञान के लिये केवल उनके मुख मंडलों की ओर आप के देखने की जरूरत है।

भाइयो और बहनो! अपने घावों के छिपाने के हेतु तुम ऐश्वर्य के लिये हाय २ करते हो, उन्हीं (घावों को) ढकने के लिये तुम पट्टी बांधते हो। यहां एक साधु है जिसकी आत्मा प्रकाश्य थी, यहां एक साधु है, जिसे अपनी आत्मा की अमीरी और गौरव का अनुभव हो गया था।

उसके पास महान सिकन्दर खड़ा था, जो अपनी आन्तरिक हीनता को छिपाना चाहता था। महात्मा के प्रभापूर्ण, प्रसन्न आनन्द मय चेहरे की ओर देखिये। महान सिकन्दर उसकी सूरत से मुग्धित होगया। वह उस पर आसक्त हो गया और उसने महा-

उस को यूनान चलने को कहा। साधु हंसा, और उसने उत्तर दिया, संसार मुझ में है, मैं संसार में नहीं जा सकता। विश्व मुझ में है, मैं विश्व में नहीं अवरुद्ध हो सकता। यूनान और रूस मुझ में हैं। सूर्य नक्षत्र मुझ में उदय और अस्त होते हैं।"

महान् सिकन्दर इस प्रकार की भाषा का अभ्यासी न होने के कारण विस्मित हुआ। उसने कहा, मैं तुम्हें धन दूंगा सांसारिक सुख से मैं तुम्हें ढका दूंगा। सब तरह के पदार्थ जो लोगों को मोहते और अपना दास बनाते हैं, बहुलता से तुम्हें प्राप्त होंगे। कृपया मेरे साथ यूनान चलिये।"

महात्मा हंसा उसके उत्तर पर हंसा और बोला, ऐसा कोई हीरा या नक्षत्र नहीं है, जिसके प्रकाश का कारण मैं नहीं हूं। संपूर्ण स्वर्गीय वस्तुओं के गौरव का कारण मैं हूं समस्त इच्छित वस्तुओं की मोहनी, चित्ताकर्षक शक्ति मुझमें है। पहले तो इन पदार्थों को गौरव और मनोहरता मैंने प्रदान की, और अब इन्हें ढूंढता फिरूं, सांसारिक धनिकों के द्वारों पर मांगता फिरूं, सुख और आनन्द पाने के लिये प्राकृतिक वृत्तियों और स्थूल शरीर के दरवाजों पर हाथ फैलाऊं, यह मेरी मर्यादा के विरुद्ध है, मेरे लिये अपमान-जनक है। यह मेरी शान के खिलाफ है। मैं इतना नीचा कभी नहीं झुक सकता। न ही, मैं उनके द्वारों पर हाथ पसार सकता।"

इस से महान् सिकन्दर आश्चर्य में पड़ गया। उसने अपनी तलवार खींचली और साधु का सिर उड़ादेना ही चाहता था। अबतो साधु खिलखिला कर हंसा और बोला, "ऐ सिकन्दर, तूने अपने जीवन में इतनी झूठी बात कभी नहीं कही, ऐसा कृत्रिम मिथ्यालाप कभी नहीं किया। मेरा वध, मेरा वध! वह तलवार कहां है जो मुझे मार सकती है जो मुझे घायल कर सकती है ऐसी कौनसी विपत्ति मेरी प्रसन्नता को नष्ट कर सकती है। वह कौनसा रंज है। जो मेरे आनन्द में विघ्न डाल सकता है? नित्य, आज, कल और सदा एक रस पवित्र और शुद्धों में शुद्ध विश्व ब्रह्मांड का प्रभु मैं वही हूं, मैं वही हूं। ऐ सिकन्दर ? जो शक्ति तुम्हारे हाथों को चलाती है मैं वही हूं। तुम्हारे शरीर के मर जाने पर भी मैं, वही शक्ति, जो तुम्हारे हाथों को चलाती है, बना रहता हूं। मैं मैं वही शक्ति हूं। जो तुम्हारी नसोंको हरकत देती है।" सिकन्दर के हाथ से तलवार छूट पड़ी।

श्री स्वामी शंकराचार्य जी के चार मठ॥

श्रुतिः स्मृतिः पुराणानां
आलयं करुणालयम्।
नमामि भगवत्पादं
शंकरं लोक शंकरम्॥

जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य ने युधिष्ठिर

के कली में कलि सम्वत् आज से तेईसगो बावनवें वर्ष पहले वैशाख शुक्ला पंचमी के दिन दक्षिण प्रदेश के केरल राज्यान्तर्गत कलटी ग्राम वासी द्रविड़ ताम्बुली श्री शिव गुरु नामक ब्राह्मण की पतिव्रता पत्नी श्री सती देवी के गर्भ से जन्म धारण कर समस्त भारत का तथा वैदिक धर्म का सब विश्व में प्रचार किया। भारत वर्ष से नास्तिक मत का निराकरण कर वैदिक धर्म का पुनः स्थापन किया था। उन्होंने प्रचारार्थ भारत वर्ष के चहुँ ओर चार मठ स्थापित किये। इन मठों की चार सम्प्रदाय और उन पर जितेन्द्रिय योगी विद्वान् संन्यासी धर्म प्रचारार्थ नियत किये जैसे पूर्व दिशा में गोवर्धन मठ भोगवार सम्प्रदाय, वनारण्य सन्यासी पुरुषोत्तम क्षेत्र, जगन्नाथ देवता, विमला देवी, पद्मपादाचार्य, महोदधि तीर्थ, प्रकाशक ब्रह्मचारी, 'प्रज्ञानं ब्रह्म' महावाक्य इन का वेद ऋग्वेद, काश्यप गोत्र है। वन और आरण्य के और गोवर्धन मठ के यह देश अधिकार में रक्खे। अङ्ग वङ्ग कलिङ्ग, मगध, उत्कल बर्बर।

वननामा सन्यासी का अर्थः—

सुरम्ये निर्जने स्थाने वने वासं करोति यः।
आशा पाश विनिर्मुक्तो वन नामा स उच्यते॥

सुन्दर रमणीक एकान्त स्थान वन में, जो वास करता है, आशा के बन्धन से नियुक्त है वह वन नामा कहाता है। अरण्य का अर्थः—

अरण्ये संस्थितं नित्य मानन्दे नन्दने वने ।
त्यक्त्वा सर्व मिदं विश्वं आरण्यं परिकीर्तितं ॥

इस सर्व विश्व को त्याग कर नित्यानन्द वन में स्थित रहे वह अरण्य कहाता है।

विषयान् वार्यते इति भोगवारः ।
स्वयं ज्योति विजानाति स प्रकाशकः ॥

दूसरा सरस्वती भारती और पुरियों का शृङ्गेरी मठ है। भूरिवार सम्प्रदाय है, भूर्भुवः स्वः गोत्र है, रामेश्वर क्षेत्र है, आदि वाराह देवता, कामाक्षी देवी, पृथ्वीधराचार्य, तुङ्गभद्रा तीर्थ, चैतन्य ब्रह्मचारी, वेद यजुर्वेद, "अहं ब्रह्मास्मि" महावाक्य है। आन्ध्र, द्रविड़, कर्नाटक केरल आदि देश शृङ्गेरी मठ के आधीन रक्खे सरस्वती का अर्थः—

स्वर ज्ञान रतो नित्यं स्वरवादि कवीश्वरः।
संसार सागरासार हन्ताऽसौहि सरस्वती ॥

नित्य स्वर ज्ञान में रत, स्वर वादि, कवीश्वर संसार सागर असार हन्त वही सरस्वती है।

विद्या भारेण सम्पूर्णः
सर्व भारं परित्यजन् ॥
दुःख भारं न जानाति।
भारती परि कीर्तितं ॥

विद्या भार से सम्पूर्ण सर्व भार को त्यागता हुआ दुःख भार को न जानता है वह

भारती कहाता है।

ज्ञान तत्वेन सम्पूर्णः ।
पूर्ण तत्व पदेस्थितः ॥
परं ब्रह्म रतोनित्यं
पुरी नामा स उच्यते ॥

तत्व ज्ञान से सम्पूर्ण पूर्ण तत्व पद में स्थित नित्य परब्रह्म में रत वह पुरी नामा कहाता है।

तीर्थ, तथा आश्रमों का पश्चिम में शारदा मठ, कीटवार सम्प्रदाय, द्वारिका क्षेत्र, सिद्धेश्वर देवता, भद्र काली देवी, विश्व रूपक आचार्य, गोमती तीर्थ, अमल ब्रह्मचारी कारूपक, वेद सामवेद, "तत्वमसि" महावाक्य अविगत गोत्र है। पश्चिम दिशा में स्थित सिन्धु, सौवीर, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र आदि देश शारदा मठ के आधीन रक्खे गये हैं।

त्रिवेणी संगमे तीर्थे ।
तत्व मस्यादि लक्षणः ॥
स्नायात् तत्वार्थ भावेन ।
तीर्थ नामा स उच्यते ॥

तत्वमस्यादि लक्षण त्रिवेणी संगम तीर्थ में तत्वार्थ भाव से स्नान करे वह तीर्थ नामा कहाता है।

आश्रम ग्रहणे प्रौढ़ ।
आशा पाश विवर्जितः ॥
यातायात विनिर्मुक्त ।
एषाश्रम उच्यते ॥

आश्रम ग्रहण में प्रौढ़ आशा पाश विवर्जित, आवागमन से विनिर्मुक्त यह आश्रम कहाता है।

चौथा उत्तर दिशा में ज्योति अर्थात् जोशी मठ है। श्रीमठ, गिरी, पर्वत और सागरों का। "उदीचितम्" कहा है इनकी आनन्दवार सम्प्रदाय, बद्रीश आश्रम क्षेत्र, नारायण देवता पूर्ण गिरी देवी, तोटक आचार्य, अलक नंदा तीर्थ, आनन्द ब्रह्मचारी, 'अयमात्मा ब्रह्म' यह महा वाक्य वेद अथर्व वेद और भृगु गोत्र है। उत्तर दिशा में स्थित कुरु का मीर, काम्बोज, पांचाल आदि देश शारदा मठ के आधीन रक्खे गये।

वासो गिरि वने नित्यं ।
गीता ध्यान तत्परः ॥
गम्भीराचल बुद्धिश्च ।
गिरी नामास उच्यते ॥

नित्य गिरि तथा वन में वास, गीता के पढ़ने में तत्पर गम्भीर और अचल बुद्धि हो वह गिरी नामा कहाता है।

वसन पर्वत मूलेषु ।
प्रौढ ज्ञानं बिभर्ति यः ॥
सारासारं विजानाति ।
पर्वतः परि कीर्तितः ॥

जो पर्वत के मूलों में बसता हुआ महान् ज्ञान को धारण करता है और सारासार को

जानता है वह पर्वत कहाता है।

तत्त्व सागर गम्भीरः ।
ज्ञान रत्न परिग्रहः ।
मर्यादां नैव लंघते ।
सागरः परिकीर्तितः ॥

गम्भीर तत्त्व सागर से ज्ञान रत्न को ग्रहण करने वाला मर्यादा को न लांघे वह सागर कहाता है। इन दश नाम सन्यासियों ने और दश नाम ब्रह्मचारियों ने जिनको हम अगले अङ्कों में लिखेंगे सच्चे अर्थों में भारत को अपनाया था। और उद्धार किया था। इसी भाव को यह भजन प्रकट करता है:--

भारत वतन हमारा,
भारत वतन हमारा ॥
बहती जहां पै गंगा,
यमुना की स्वच्छ धारा ।
ऋषियों ने जिन के तट पर,
ईश्वर को था विचारा ॥१॥
पैदा हुए जहां पर,
शंकर से ब्रह्मचारि ।
विद्या के बल से जिनको,
माने है सृष्टि सारी ॥२॥
जिस राम की है भक्ति,
तुलसी का दैवी गाना ।
हुए पद्माकर भी यहां पर,
जिन कृष्ण यश बखाना ॥३॥
भारत की गोद खेले;
बड़े शूर वीर भाई ।
रण भूमि में जिन्हों ने,
थी वीरता दिखाई ॥४॥

अवतारोपदेश

वेदानुद्धरते जगन्ति वहते,
भूगोलमुद्बिभ्रते ।
दैत्यं दारयते बलिं छलयते,
क्षत्र क्षयं कुर्वते ॥
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते,
कारुण्य मातन्वते ।
म्लेच्छान्मूर्च्छयते दशाकृति कृते,
कृष्णाय तुभ्यं नमः ॥

दश महामायाओं ने दश अवतार धारण किये। जब प्रकृति की धूमावस्था अर्थात् वाष्प अवस्था थी तब धूमावती ने मीनावतार धारण किया। जलावस्था में बगला ने कूर्मावतार लिया। जब कुछ पृथिवी और जल मिली हुई अवस्था में था तब भैरवी ने वराह रूप धारण किया। छिन्नमस्ता ने नृसिंह, भुवनेश्वरी ने वामनावतार, सुन्दरी ने परशुराम, तारा ने राम, काली ने कृष्ण, कमला ने बुद्ध अवतार धारण किया और मातंगी कल्की अवतार धारण करेगी।

कालीतारा छिन्नमस्ता
भैरवी भुवनेश्वरी ।

मातंगी बगला कमला
धूमावती च सुन्दरी ॥

डाक्टरों ने भी अनुभव किया है कि मनुष्यगर्भ की आकृति प्रथम मछली जैसी होती है। पुनः क्रमशः कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और अन्त में यह पुरुष कल्कि अवतार धारण करेगा। तब मुक्त होजायगा।

चैत्र शुक्ल तृतीयायाम् अपराह्णे भगवान् नारायणः मत्स्यरूपेण अवातरत्। ततः सुरद्रोहिणं शङ्खासुरं हत्वा सिन्धुतः वेदान् उद्धृतवान् ॥ १ ॥

चैत्र शुक्ल तृतीया के दिन अपराह्ण काल में भगवान विष्णु ने मछली के रूप में अवतार लिया पीछे देवों के शत्रु शंखासुर को मार समुद्र से वेदों का उद्धार किया। १

वैशाख पूर्णिमायां सायं कूर्मावतारो बभूव स च देव दैत्यानां सागर मंथने प्रवृत्ते अधः अधः गच्छन्तं मन्दराचलं मन्थानं स्वपृष्ठे दधार ॥ २ ॥

वैशाख पूर्णिमा के दिन सायं काल में कूर्मावतार हुआ। उसने (कछुवा) देवदैत्यों का समुद्र मन्थन प्रवृत्त होने पर नीचे २ जाते हुये मन्दरा चल रूपी रई को अपने पृष्ठ पर धारण किया ॥२॥

भाद्रपदस्य शुक्ल तृतीयां अपराह्णे वराह रूपोऽभूत्। तेन हिरण्याक्ष नामानं दैत्यं मारयित्वा। जले निमग्नायाः मेदिन्याः स्वदंष्ट्रया उद्धारोऽकारि ॥ ३ ॥

भाद्र पद की शुक्ल तृतीया के दिन अपराह्ण काल में शूकर रूपी हुवा। उस (शूकर) ने हिरण्याक्ष नाम दैत्य को मार, जल में डूबी हुई पृथ्वी का अपने डाढ़ से उद्धार किया ॥३॥

वैशाख शुक्ल चतुर्दश्यां सायं नृसिंह स्तम्भात् प्रादुरभूत्। स तु तत्काल एव नखैः हिरण्यकशिपुं विदार्य आत्मभक्तस्य प्रह्लादस्य रक्षणमकार्षीत् ॥ ४ ॥

वैशाख शुक्ल चतुर्दशी के दिन सन्ध्या काल में नरसिंह स्तम्भ से प्रकट हुए वह तो तत्काल ही अपने नखों से हिरण्यकशिपु को फाड़ कर अपने भक्त प्रह्लाद का रक्षण किया।

भाद्रपद शुक्ल द्वादश्यां मध्याह्ने कश्यपात् आदित्यां वामनः प्रकटो बभूव। स च इन्द्र रक्षार्थं बलि सन्निधिं गत्वा त्रिपदां भूमिं अयाचत। पश्चात् हस्ताभ्यां पादाभ्यां स्वर्गलोकं व्याप्य तृतीयं पदं बलेः शिरसि निधाय तं सुतले प्रेषयामास ॥ ५ ॥

भाद्रपद शुक्ल द्वादशी के दिन मध्याह्न समय कश्यप (ऋषि) से अदिति में वामन प्रकट हुवा। उसने इन्द्र के रक्षण के वास्ते बली के

पास जा तीन पांव भूमि को मांगा । पीछे दो पैरों से सब लोकों को व्याप कर तीसरे पैर को बली के सिर पर रख के उसको सुख लोक में भेज दिया ॥५॥

वैशाख शुक्ल तृतीयायां मध्यान्हे जमदग्निपुत्रः परशुरामः रेणुकायां उदपद्यत । स तु पितृ हिंसा कारिणं हैहयाधिपम् अहन् । तेन च क्रोधवशात् एक विंशति वारं धरणिः निःक्षत्रिया कृता ॥६॥

वैशाख शुक्ल तृतीया के दिन मध्यान्ह समय जमदग्नि ऋषि का पुत्र परशुराम रेणुका में उत्पन्न हुआ । उसने पिता की हिंसा करने वाले सहस्रार्जुन को मारा और उसने क्रोध के आधीन होने से इक्कीस बार पृथ्वी क्षत्रिय रहित की ॥६॥

चैत्र शुक्ल नवम्यां मध्यान्हे दशरथात् कौशल्यायां श्रीरामचन्द्रः आविर्बभूव । तस्य भरतः लक्ष्मणः शत्रुघ्नः इति त्रयानुजाः बभूवुः स च पितु राज्ञया सीता लक्ष्मणाभ्यां सार्कं वनमयात् । तत्र रावणः सीतां जहार । अथ रामचन्द्रस्य सुग्रीवः मित्रं अभवत् । ततः वालिनं निहत्य वानरराज्ये सुग्रीवं अभ्यषिचत् । तदनन्तरं हनुमता सीता शुद्धिं कारयित्वा वानर सैन्येन सार्धं लंकां गत्वा रावण कुम्भ कर्णौ अवधीत् लक्ष्मणस्त्विन्द्र जितं मारयामास । तदनन्तरं सीतया सह अयोध्या मागत्य दश सहस्राणि वर्षाणि धर्मेण प्रजा पालनं कृतवान् ॥७॥

चैत्र शुक्ल नौमी के दिन मध्यान्ह समय दशरथ से कौशल्या में श्रीरामचन्द्र प्रकट हुए उस राम के भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, ऐसे तीन छोटे भाई उत्पन्न हुए वह (राम) पिता की आज्ञा से सीता और लक्ष्मण सहित अरण्य को गया । तहां रावण ने सीताजी का हरण किया । अनन्तर सुग्रीव रामचंद्रजी का मित्र हुआ । पीछे बलि को मार वानरों के राज्य में सुग्रीव को अभिषेक किया । इसके पीछे हनुमान से सीता की खोज कराकर वानर सेना के साथ लंका को जा रावण और कुम्भकर्ण का वध किया । और लक्ष्मण ने इन्द्रजित का वध किया । अनन्तर सीताजी के साथ अयोध्या को आकर दश हजार वर्ष तक धर्म से प्रजा पालन किया ।

श्रावण कृष्णाष्टम्यां निशीथे वसुदेवा देवक्यां श्री कृष्णः प्रादुर्भूतः । श्रावणकृष्ण पक्षमेव भाद्रपदकृष्णपक्षमुत्तरदेशस्थाः वदन्ति । तेन च कंसं हत्वा कारागृहात् देवकी वसुदेवौ मोचितौ । एवं बहून् दुष्टान् हत्वा साधु पालनम् अकरोत् ॥८॥

श्रावण कृष्ण अष्टमी के दिन आधी रात में वसुदेव से देवकी में श्रीकृष्ण प्रकट हुआ । श्रावण कृष्ण पक्ष को ही भाद्र पद कृष्ण पक्ष ऐसा उत्तर देश में रहने वाले कहते हैं उस कृष्ण ने कंस को मार कर बन्दी खाने से देवकी और वसुदेव मुक्त किये । इस प्रकार बहुत दुष्टों को मार कर साधुओं का पालन

किया ॥८॥

आश्विन शुक्ल दशम्यां सायं बुद्धावतारो भूत्। सच असुरान् अधर्मं उपदिश्य नरके पातयामास ॥९॥

आश्विन शुक्ल दशमी के दिन सायंकाल में बुद्धावतार हुआ। उसने असुरों को अधर्म का उपदेश कर नरक में धकेला।

कलियुगान्ते आश्विन शुक्ल षष्ठ्यां सायं कल्किः भविष्यति स च अधार्मिकान् हत्वा कृतयुगं स्थापयिष्यति ॥१०॥

कलियुग के अन्त में आश्विन शुक्ल षष्ठी के दिन सायंकाल में कल्कि होगा वह अधर्म करने वालों को मार कृतयुग की स्थापना करेगा ॥१०॥

बाल चिकित्सा।

छोटे बच्चों के लिये घरेलू दवायें।

(श्रीमती [illegible] रानी देवी)

यदि बालक की आंख दुखने आगई हो तो नीम की पत्तियों का रस बाईं आंख दुखती हो तो दाहिने कान में और दाहिनी आंख दुखती हो तो बायें कान में टपकावे।

अमचूर को लोहे के बरतन में डाल कर लोहे के दस्ते से थोड़ा २ पानी डाल कर खूब घोटे और पतला पतला लेप करे या अनार की पत्तियों को पीस कर टिकिया बना कर सोते समय आंखों पर बांधे। आंख का आना (उठना) आराम होजाता है। गोभी के पत्तों की टिकिया भी यही गुण करती है।

जो आंख उठने न आई हो और गरमी के कारण खुजलाती हो तो त्रिफला (हर, बहेरा, आंवला) को रात के समय पानी में भिगोदे और सुबह उस पानी को छान कर आंखों पर छींटा मारे।

घोड़े के अगले पैर के बीच के जोड़ के पास एक टेक होती है (जैसे आदमियों के पैर की उंगलियों में जूता पहनते २ पड़ जाती हैं घाटे लोग उसे काट डालते हैं) उसे तेज़ चाकू से काट कर छः महीने की उमर वाले को डेढ़ रत्ती बराबर उसकी माँ के दूध में घिसकर दे तो पसली का चलना बंद होजाता है।

असली काली गौ का मूत्र सूर्य निकलने के पहिले ले ले (ख्याल रहे कि गाय बिलकुल काली होनी चाहिए एक धब्बा भी किसी रंग का न हो) यदि एक सेर गौ मूत्र हो तो १ तोला असली काश्मीरी केशर लेकर पहले केशर को गौ मूत्र ही में पीस कर लुगदी बनाले फिर उसी सेर भर में [illegible] डाले

फिर छान कर साफ की हुई शीशी में भर कर रखले छः महीने के बालक को ४ बून्द छः से ऊपर वाले को ८ बून्द उतना ही माता के दूध में सुबह, दोपहर, शाम दिया करें, तीन दिन में डिब्बा अर्थात् सूखा की बीमारी को आराम करती है लेकिन २१ दिन तक जरूर देनी चाहिये।

यदि बच्चा दूध गिरावे या हरे रंग का दस्त हो तो समझना चाहिये कि इसकी पाचन शक्ति बिगड़ गई है इस हालत में वंश-लोचन, पोदीना सूखा, जीरा सफेद, इलायची छोटी, मस्तगी रूमी दो २ रत्ती बारीक पीस कर एक तोले शहद के साथ दिन में कई दफा चटावे, आराम होगा।

यदि बालक को हिचकी अधिकता से आने लगे और आप से आप बन्द न हो तो कलौंजी एक माशे बारीक पीस कर तीन माशे शहद में मिला कर चटावे।

गंधा बिरोजा की पट्टी बराबर बांधने से बच्चों की पसली चलना बंद होता है।

सूअर का घी खिलाने से भी बच्चों का पसली चलना बंद होता है।

बच्चों की पसली चलने का कारण सर्दी और अजीर्ण होना है ऐसी दशा में पहिले थोड़ा सा अरंडी का तेल दे जिससे एक दो दस्त हो जावें फिर चौसंजी जो ऊपर लिखी हुई है दे। छाती पर तारपीन का तेल या मोम व गुल रोगन मिलाकर मले या आटे का तिहायला हलवा गर्म २ छाती पर बांधे। केशर या कस्तूरी भी माता के दूध में दे।

(डाक्टर आनन्द स्वरूप शर्मा।)

बच्चों की जन्म घूंटी।

बालक के पैदा होने से सवा महीने तक नीचे लिखी घूंटी देने से बहुत लाभ होता है। इन्द्र जौ दो दाना, अजवायन एक चुटकी, अमलतास एक दाना, बायबिड़ंग ४ दाने पीपल एक छोटा टुकड़ा, सौंफ एक चुटकी, मुनक्का एक दाना, एक लौंग का फूल, इन सबों को थोड़े से पानी में डालकर खूब औटाना चाहिए। इसके बाद जरा सा-दो मटर के बराबर गुड़-उसी में घोलकर छानलें। जब पानी एक चमचा रह जावे तो बच्चे को पिला देना चाहिए। यदि बच्चे को पैखाना साफ न हो तो इसी घुटी में एक बड़हल का बीज भी छोड़देना चाहिए। सवा महीने के बाद भी जब कभी बच्चे को कोई शिकायत हो यही घूंटी देनी चाहिए यदि बच्चे का पेट कड़ा रहे तो १ चौकिया सोहागा भून कर उसे भी घुटी में छानने के पहिले मिला देना चाहिये।

छोटे बच्चों के मुंह में छाले निकल आने से यदि बालक को कष्ट होता हो तो एक पैसे की शीतल चीनी (कबाब चीनी) पपड़ीया कत्था दो पैसे का, वंशलोचन दो

पैसे भर, छोटी इलायची (गुजराती) ४ दाने इन सब को पीस कर मोटे कपड़े में छान कर शीशी में सफाई से भर कर रख लेना चाहिए। जब कभी मुंह पके इस सफूफ को बालक के मुंह में छिड़क देना चाहिये इससे बच्चों का लार टपकने लगेगा और छाले तीन चार बार लगाने से ही आराम हो जावेंगे।

(माहि)

मन्दिर के गुम्बज में अशर्फियां

किसी धनवान् पुरुष ने अपने मन में विचार किया कि मेरे पास धन बहुत है इस कारण यदि इस समय इसमें से कुछ धन गुप्त करके रखदूं तो समय पड़ने पर मुझे अथवा मेरे बालकों के काम आवेगा यह निश्चय करके उसने अपने बनवाये हुये सिद्धेश्वर महादेव के गुम्बजदार शिवालय के गुम्बज में गुप्त रीति से धन रक्खा। उस धन को रखते उसे किसी ने भी नहीं देखा फिर उसने अलग अपनी बही में इस प्रकार लिख दिया "सम्वत् १६२५ वीं की साल में उत्तरायण सूर्य, चैत्रमास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी के दिन चार घड़ी दिन चढ़ने सिद्धेश्वर महादेव के मन्दिर के गुम्बज में पन्द्रह लाख अशर्फी रक्खी हैं, जब काम पड़े तब निकाल लेना"। इस प्रकार से लिख-कर बन्दोबस्त से बही को रखकर साहूकार निश्चिन्त हुआ। कुछ दिनों के बाद वह धनवान् तीर्थाटन करने को गया और दैव योग से तीर्थों में ही उसका अन्त होगया। इस से वह अपने रक्खे हुए धनादि को अपने सन्तानों को बता नहीं सका। पश्चात् उसकी अन्त्येष्टि क्रिया आदिक करके उस के साथ के आदमी लड़कों बच्चों सहित घर लौट आए। समय पाकर उसके लड़के बड़े होकर अपने पैत्रिक कार्य में लगे। व्यापार में बारम्बार टोटा आने से उन्हें धन की आय बन्द हुई। फिर उन्हों ने ऋण लेकर व्यवहार चलाया। दैव संयोग से फिर व्यापार में हानि हुई और ऋण का रुपया भी डूब गया जब लेनदार लोग तकाज़ा करने लगे तब विचारे घबराकर विचारने लगे कि हमारे बाप दादा बहुत धनवान् थे पुराने बही खातों को देखें यदि उसमें कुछ पता लगे और कुछ लेना लोगों पर निकाले तो काम चले। इसे वसूल करने का उपाय किया जाय। ऐसा विचार करके बही खाता देखने लगे। देखते २ जिस बही में गुम्बज वाली पन्द्रह लाख अशर्फियों की बात लिखी थी वही बही निकली देखते ही बहुत प्रसन्न होकर उन्होंने उसी समय मजदूरों को बुलाकर शिवालय का गुम्बज तुड़वाया। गुम्बज तो टूट गया किन्तु उसमें अशर्फियों का कुछ पता न लगा। तब वे विचारने लगे की, क्या बही में यह लिखी हुई अशर्फियों की बात झूठी है ? अथवा बात ही

हमारे समझ में नहीं आई ? फिर अपने मित्रोंसे बतलाकर उन्होंने इस पर विचार किया। तब मित्रों की सलाह से दूसरे बही खातों को देखना आरम्भ किया। जिसमें भिन्न २ आसामियों के खाते उसी वर्ष में पन्द्रह लाख अशर्फियों की वसूली मिली और खर्च की जगह में ऐसा लिखा मिला कि, पन्द्रह लाख अशर्फियों की तफसील अमुक बही में गुम्बजके नामे लिखी है। ऐसा तफसील सहित पूरा व्यवहार लिखा देखकर सब आश्चर्य में आए और कहने लगे कि हिसाब किताब सब ठीक है लिखा भी साफ है फिर क्या कारण है कि, लाल झंड पड़ती है बही में तो बात झूठी दिखी आसकती नहीं। इससे जाना जाता है कि, मानो गुम्बजमें से धन किसीने चुरा लिया होगा अथवा रखते समय ही कुछ गड़बड़ हुई होगी इस प्रकार से संदिग्ध बातों को सुनकर बेचारे साहूकार के लड़के बड़ी चिन्तामें रहने लगे। जिस जिस को बही दिखा कर हमेशा पूछा करते किन्तु बहुत दिनों तक पता नहीं लगा। अन्त में कुल के सबसे वृद्ध एक बुद्धिमान पुरुष के पास जाकर उन्होंने अपना सब वृत्तान्त कहा और बही दिखाई। फिर कहा कि धन नहीं मिला इस की इतनी चिन्ता नहीं है किन्तु मन्दिर के शिखर उतरवाने की बड़ी चिन्ता है। अब हम सब के सामने मुंह दिखाने योग्य नहीं रहे। सब यही कहते हैं कि, यह लोभमें ऐसे कपूत निकले कि, बाप ने तो देवस्थान बनाया और इन्होंने ढहा दिया। इस प्रकार निन्दा सुन सुनकर बहुत दुःख होता है। इससे भला कि, ऐसे निन्दित जीवन से संसारमें रहना अच्छा नहीं। सो यदि आप कुछ उपाय बताओ जिस से हम दुःख से छूटें तो ठीक है नहीं तो, हम को मृत्यु के अतिरिक्त दूसरा मार्ग नहीं सूझता है। हमारे पास इतना पैसा भी नहीं है जिससे मन्दिर का गुम्बज ठीक करवाएं जिसपर लेन-दारों के तकाजों से और भी जी दुःखी है। साहूकार के लड़कों की बात को सुन कर उस वृद्ध बुद्धिमान पुरुष ने उन्हें सन्तोष दिलाया। और बही खाता भली प्रकार देखकर उनसे कहा कि भाई ! तुम किसी प्रकार की चिन्ता मत करो। बही में जो कुछ लिखा है सब अक्षर २ सत्य है। किन्तु तुम पहले एक काम करो कि, मैं तुम्हें रुपया देता हूं इसे प्रथम मन्दिर का शिखर जैसा था वैसा ही बनवादो। देखना प्रथम जैसा गुम्बज बना हुआ था वैसा ही बनवाना, उसमें कुछ फेर फार न होने पावे, फिर जब चैत्र सुदि अष्टमी आवे तो उस दिन सवेरे ही मेरे पास आना वृद्ध की बातों को सुन कर और रुपया लेकर वे अपने घर आये और मन्दिर का शिखर जैसा पहले था वैसा बनवा कर चैत्र सुदि अष्टमी का मार्ग देखने लगे जब चैत्र सुदि अष्टमी का दिन आया तब उस दिन उन्होंने वृद्ध पुरुष को अपने घर बुला कर लाये और उसी की आज्ञानुसार

उस दिन खूब उत्साह मनाया। उत्साह और आनन्द में मग्न थे वही दिन चढ़ गया तब उस वृद्ध पुरुष ने कहा चलो सिद्धेश्वर महादेव का दर्शन करने चलें। फिर सब मन्दिर में दर्शन करने गये। दर्शन करके [illegible]खाना फिरते फिरते गुम्बज की छाया दिखा कर उस वृद्ध पुरुष ने कहा कि भाई मन्दिर का शिखर यह है यहां ही तुम्हारी पन्द्रह लाख अशर्फी गड़ी है। यहां ही खोदने से वह मिलेंगी फिर तो साहूकार के लड़कों ने मजदूर बुला कर उसी जगह को खुदवाई और वहां से ही अशर्फी निकली फिर तो अशर्फियों को पाकर साहूकार की सन्तान फिर से धनवान् होकर सुखी होगई हे शिष्य! देख बही में जो कुछ लिखा था सो झूठा नहीं था, अक्षर भी स्पष्ट था सब ही बांच सकते थे उसका अर्थ सब ही लोग समझ सकते थे गुम्बज में ही अशर्फियां भी थी किन्तु किसी दूसरे से अशर्फियों का पता नहीं लगा क्योंकि बांचने को तो सब ही बांचते थे किन्तु चैत्र मास की अष्टमी के दिन चार घड़ी दिन चढ़े मन्दिर के शिखर में अशर्फी रक्खी हैं इस वाक्य का अभिप्राय किसी की समझ में नहीं आता था उस वृद्ध पुरुष ने विचार किया कि पन्द्रह लाख अशर्फियां मन्दिर के ऊपर गुम्बज में तो रक्खी जा सकती नहीं है क्योंकि ऐसे छोटे शिखर में पन्द्रह लाख अशर्फी का अंटना असंभव है इसलिये भूमि में शिखर की छाया में अवश्य रक्खी होंगी क्योंकि जैसा बही में लिखा है उसी समय मन्दिर के शिखर की छाया जिस स्थान पर जावे उसी को मन्दिर का शिखर समझना चाहिये यदि लिखे हुवे समय के विरुद्ध किसी दूसरे काल अथवा दूसरी तिथि में छाया के शिखर में भी देखा जाता तो अशर्फि नहीं मिलेगा इस प्रकार से उस लेख के अभिप्राय को जानने वाला बुद्धिमान् वृद्ध पुरुष मिला तब ही यथार्थ अभिप्राय समझ में आया और धन मिला॥

उपरोक्त कथा का सिद्धान्त।

इसी प्रकार से संस्कृत अथवा प्राकृत भाषा आदि के वेदान्त के ग्रन्थ भी बांचने जानता हो, उसका शब्दार्थ भी समझता हो, कि परमात्मा सर्वत्र पूर्ण है, देह त्रय का द्रष्टा है, अवस्था त्रय का साक्षी है, पंच कोशातीत है, सच्चिदानन्द रूप है और यह बात सत्य भी है क्योंकि, देह रूपी शिखर में सच्चिदानन्द आत्मा रूपी धन है और श्रुति स्मृति शास्त्रों रूपी बही में लिखा भी है तथापि ब्रह्म निष्ठ सद्गुरु द्वारा शास्त्रों का तात्पर्य जाने बिना आत्म धन की प्राप्ति व दर्शन नहीं होती है।

ब्रह्मा के पुत्र नारदमुनि ऋग्वेदादि चारों वेद, शास्त्र पुराण और इतिहास आदि सर्व विद्या के ज्ञाता थे किन्तु आत्म ज्ञान न होने से महान् शोक सागर में पड़े रहते थे [illegible] में

जब दुःखी होकर सनत्कुमार गुरु की शरण में गये तब उन के उपदेश से निरतिशय सुख रूप पूर्ण आत्मा को अपरोक्ष जान कर दुःख रहित हुए। यह कथा छान्दोग्य उपनिषद् में विस्तार से है।

विज्ञान

मेरे मन की बनावट मेरे मन के अनुभवों को पृथक् २ रहने नहीं देती। मुझ में स्वाभाविक इच्छा है कि इन अनुभवों को सम्मिलित करूं, इनके सम्बन्धों को जानूं, इन मणकों को एक सूत्र में परोकर एक माला तयार करूं। यह इच्छा स्वाभाविक है और कोई मनुष्य इससे शून्य नहीं है और शक्तियों की भान्ति इसके सम्बन्ध में भी मनुष्यों में भेद है। हमारा समग्र जीवन अपने अनुभवों को संगठित करने में व्यय होता है। इस क्रम से पूर्व जगत् एक गड़बड़ की अवस्था में होता है हम इस अवस्था की जगह व्यवस्था उत्पन्न करते हैं। जब हम कई अनुभवों को एक सूत्र में परोकर इन्हें व्यवस्था में करते हैं तो हमारा ज्ञान वैज्ञानिक ज्ञान कहलाता है। जैसा कि मैं देखता हूं कि फल वृक्ष से पृथिवी पर गिरते हैं, देखता हूं कि पृथिवी सूर्य के गिर्द घूमती है, मैं देखता हूं कि समुद्र में कहीं जल ऊपर को उठता है और कहीं साधारण तल से नीचे चला जाता है प्रकाश की किरणें सीधी लकीर में क्रिया करती हैं जब तक मेरे अनुभव परस्पर असम्बन्ध हैं मेरा ज्ञान वैज्ञानिक ज्ञान नहीं परन्तु जब मैं जान लेता हूं कि यह अवस्थायें एक ही नियम गुरुत्वाकर्षण के रूप हैं तो मेरा ज्ञान साइन्टिफिक ज्ञान है। अब मेरे अनुभव पृथक् और स्वतन्त्र नहीं किन्तु एक दूसरे के साथ बान्धे गये हैं इसी प्रकार जब मैं शब्द सुनता हूं और साथ ही जानता हूं कि मेरे सुनने से पूर्व वायु मण्डल में एक विशेष क्रिया हुई है तो मेरा ज्ञान विज्ञान है। विज्ञान का काम अनुभवों को संगठित करना अर्थात् उन के मध्य में भिन्न २ प्रकार के सम्बन्धों का स्थापन करना है यह कार्य बहुत बड़ा है इस लिये इसे भली प्रकार करने के लिये मनुष्य का मन श्रम-विभाग के नियम पर अनुष्ठान करता है। वृक्ष अपनी जड़ों के द्वारा जलीय वा पार्थिव लाभ दायक परमाणुओं को खींच कर अपने शाखा पत्रों के द्वारा वायु में फैलाते हैं और जल को खींच कर वाष्प बना कर सूर्य को देते हैं तब वर्षा होती है। बादलों को सम्मिलित करते हैं वर्षने के लिये विवश करते हैं तब जल साधारण तल से नीचे चले जाते हैं तब पीपल के वृक्षादि अपनी जड़ों के द्वारा खींच कर सहस्रों मन जल सूर्य को देते हैं। जब पीपल पर नूतन किशलय फूटते हैं तब उसके नीचे पानी की बूंदें भी टपकने लग जाती हैं।

यह फास्फोरस जो दिमाग़ में सोचने का काम देती है बहुत पैदा करता है। इस लिये बुद्ध मत ने इसको ज्ञान का वृक्ष कहा है। गीता में कहा है कि:

'अश्वत्थः सर्व वृक्षाणाम्'

अश्वत्थ मेरा रूप है। और भी कहा है

दृष्टा मुच्यते रोगैः स्पृष्टा पापैः प्रमुच्यते।
यदाश्रया चिरंजीवी तं अश्वत्थं नमाम्यहम्॥

देख कर रोगों से छूटता है और स्पर्श कर पापों से तथा नीचे अनुष्ठान करने से चिरंजीवी होता है उस अश्वत्थ को प्रणाम करता हूं। मरण से पहले पीपल का फल खाने से प्राणी वैकुण्ठ को जाता है। मुमुर्षु का अभ्यास कफवात पित्त के साथ होता है जिस पदार्थ के सेवन से कफ अधिक बढ़े तब अधोगति होती है क्योंकि जल की निम्न गति है और अग्नि की ऊर्ध्व गति है। हिन्दू विज्ञान के अनुसार मरने समय जो द्रव्य कफ को फाड़ कर अग्नि को दीपन करें जैसे तुलसीदल गंगा जल पीपल का फल इत्यादि देने से मुमुर्षु को वैकुण्ठ की प्राप्ति होती है। दाभ पर सुलाने से ऊर्ध्व गति कारी विद्युत् की सहायता मिलती है प्राणोंका संगठन होता है दाभ के विषय में वेद में कहा है:—

नास्य केशान् प्रवपन्ति,
नोरसि ताड़ माघ्नते।
यस्यादिछन्न पर्वेण,
दर्भेण शर्म यच्छति॥

(अथर्व)

अछिन्न पत्र कुश से जिस सिर पर जल छिड़का जाता है उस के बाल नहीं पकते और न दिल धड़कता है

जिस घर पर काली तुलसी लगीहुई होती है उस पर बिजली नहीं गिरती इसी प्रकार जिस मंदिर पर त्रिशूल गड़ा हुआ हो मोर के पंख के झाड़ू से वायु वा अग्नि सम्बन्धि बीमारी दूर होती है। मृगछाला पर प्राणायाम करने से बवासीर नहीं होता है। गौ के गोबर के लेपन से कृमि नहीं पैदा होते। गो मूत्र के सेवन से राज यक्ष्मा दूर होता है। गौ के दर्शन से पाप नाश होते हैं शंख की आवाज से हैज़े और प्लेग के कीड़े दौड़ते हैं और कुछ मर जाते हैं।

विज्ञान के द्वारा ज्ञात हुआ है कि प्रत्येक पदार्थ में विद्युत शक्ति है और वह दक्षिण से उत्तर को स्वाभाविक री की भांति बहती है जो दक्षिण की ओर पैर करके सोता है उस की आयु का घटना अथवा बुरा स्वप्न आना सम्भव है। दोनों समय मिलने पर सोना और भोजन करना निषिद्ध है। मल मूत्र के वेगों के रोकने से रोग उत्पन्न होते हैं हवन के धूम्र और विभूति से बीमारी दूर होती है। धूप में पत्थर पर पानी डालकर पीना स्वास्थ्य

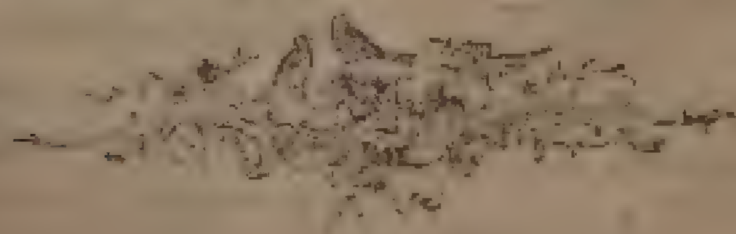
है। ऐसा है भी, परन्तु नर्मदा नदि के शालिग-राम लिङ्ग से जो जल उत्पन्न होता है वह नर महेश्वर महादेव पर चढ़ाया हुआ जल सब प्राणी व व्याधियों को विनाश करता है।

अकाल मृत्युहरणं सर्व व्याधिविनाशनम्।
विष्णुपादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते॥

(एक विद्यार्थी)

भजन।

अलबेलो छैल छिकनियाँ बृज में ठाकुर द्वारे दयाल।
चढ़ि सवेरे नौबत बाजे जागे दीन दयाल॥
उठे देखो रमण मुदित मन दर्शन अधिक विशाल॥१॥
भर २ कलश धरे सिंहासन न्हाने को तत्काल।
तेल फुलेल सुगन्ध लगावे मल २ न्हान दयाल॥२॥
पीताम्बर की पहन धोवती जामा अधिक विशाल।
पटका वाकी कमर कसी है चीरा लाल गुलाल॥३॥
हाथ कड़ूला गले गुंज है अरु वैजयन्ती माल।
शीश वाके मोर धुक धुकी हीरा जड़रहे लाल॥४॥
बड़ी दूर ते जात्री आवें वृद्ध तरुण अरु बाल।
मन्दिर पाछे कुण्ड बन्यो है काटत यम जंजाल॥५॥
गोकुल नाथ गोकुल में प्रकटे किल कुल पावे पार।
बल्लभ श्याम बसे या बृज में भक्तन के प्रति पाल॥६॥



वृक्षोंमें प्रेम-वार्तालाप

सर जगदीशचन्द्रने संसार को चकित कर दिया ॥

वृक्ष भी मनुष्योंकी तरह प्रेम करते हुए पाये जाते हैं। इस बातको भारतीय सुप्रसिद्ध वृक्ष विज्ञान वेत्ता सर जगदीशचन्द्र बसुने खोज निकाला है। आप वृक्षों में हृदय, मस्तिष्क तथा भावों को वैज्ञानिक सम्प्रदाय के प्रति उद्घाटित करने वाले प्रथम भारतीय हैं। आपने वृक्ष सम्बन्धी ज्ञानको बड़ी सावधानी से अध्ययन किया है। आपके इस गम्भीर अनुशीलनका यह परिचय है कि आपकी गति वृक्ष विज्ञान में इतनी बढ़ गई है कि आपने मनुष्यों की भांति अपने आस पासके वृक्षोंको भी प्रेम पात्र बना लिया है। आपने एक प्रेमी ताड़के वृक्षके प्रेमका अनुभव किया है कि जो अपने प्रेमी परागके अभाव में दो वर्ष तक फला ही नहीं और जब इस का प्रेमी पराग इसकी शाखाओं पर सम्मानित होगया तब वह फिर पूर्ववत् फलने लग गया। आपने प्रत्यक्ष अनुभव किया है पौधों में भी निम्न श्रेणीके पशुओंकी बुद्धि होती है इसी बात को सर्व साधारण एवम् विशिष्ट विज्ञान वेत्ताओंके कानों तक पहुंचाने के ध्येय से आपने आर्थी नामक ताड़के पौधे के विषय में एक कथा प्रकाशित की है: कि एक दिन मैंने एक बड़े ताड़ वृक्ष की बातें श्रवण की यह वृक्ष पूर्वको झुका हुआ था। मानो नत मस्तक होकर प्रार्थना कर रहा है। परन्तु मन्दिर में घण्टे का शब्द होते ही वह एक दम सीधा हो गया। भारत के बाहर के लोग इसे तीर्थ समझने लगे और इसकी पवित्रतामें विश्वास करनेसे ही अनेकों लोगोंके रोग नष्ट हो गये। यह बात बहुत ही आश्चर्य जनक कही जा सकती है परन्तु विज्ञानवेत्ता लोगोंने पता लगाया है कि एक नियत अवधि के अनन्तर जब वृक्षोंमें गर्मी सञ्चारित होती है तब वे अपनी मनोइच्छानुसार उसकी चेष्टा करते हैं। इस वृक्षका भी यही हाल था कि उस पर गर्मी का प्रभाव पूर्ण रीतिसे पड़ जाता था ठीक उसी समय मन्दिरमें घण्टे बजते थे। सर बसुका कहना है कि मन्दिरका असर वृक्षों परभी जानवरों के समान ही होता है। अर्थात् प्रथम खिन्नता आकर अत्यन्त प्रफुल्लता आ जाती है। इसी प्रकार कार बोनिक एसिडसे पौधे मर जाया करते हैं। और क्लोरोफार्मसे अचेत होनेके साथ ही साथ कभी मरते हुए भी पाये जाते हैं। आपने अपनी परीक्षामें यह भी बताया है कि पौदा आधी रात तक सचेत था। आपने अनुसन्धान करते हुए एक गाजर को पानी भी पिलाकर देखा है। तथा सूक्ष्म यन्त्रों द्वारा यह भी ज्ञात किया है कि अमुक वस्तुका अमुक समय तक वृक्षों को नशा रहा करता है।

कन्या पाठशाला ।

प्रिय पाठकगण ! भक्ति द्वारा जहां हम आप की सेवा में भक्ति का साहित्य, धार्मिक ग्रन्थों के तत्व, सामाजिक, नैतिक और आर्थिक सुधारके विषय रखते रहेंगे वहां हम समय २ पर आपको आश्रम की संस्थाओं का वृत्तान्त भी सुनाते रहेंगे । आइये सब से पहले हम आप को कन्या पाठशाला का दिग्दर्शन करावें। यूं तो देश में कन्याओं के लिये अब बहुत पाठशालाएं खुल गई हैं और वह अपने २ स्थान पर बहुत अच्छा काम कर रही हैं परन्तु आश्रम की पाठशाला इन सब से विचित्र व अद्भुत है कारण भक्ति, धर्म, सदाचार, तप, पुरुषार्थ, सादगी, उदारता, और हिन्दू सभ्यता के जिस व्यावहारिक जीवन के आधार पर यह पाठशाला चल रही है वह अपने ढंग की एक ही है ।

प्रबन्ध ।

शान्ति सरोवर के पूर्व दक्षिण कोण पर कन्या पाठशाला का भवन है यह दो मंजिल की इमारत है । इस की दूसरी मंजिल इस में रहने वाली कन्याओं के ही पुरुषार्थ का फल है । भवन के गिर्द ऊंचा अहाता है । अहाते के बाहर एक कोण पर मैनेजर पाठशाला का मकान है ।

यह मैनेजर महोदय एक विशाल मूर्ति वृद्ध ऋषि रूप रामरक्षित महात्मा हैं । हृदय की सरलता और सदाचार के यह अपने आप ही प्रमाण हैं सेठ जमनालाल बजाज ने इनकी पवित्रता से प्रभावित होकर यह शब्द उच्चारण किए थे कि मुन्शी जी आपकी पाठशाला को देखकर जी यह चाहता है कि मैं भी यहां पढ़ने लगजाऊं" (मुन्शी शब्द इनके मुलाज़मत के समय की उपाधी है) यह प्रबन्ध सब आप करते हैं और छोटी लड़कियों को पढ़ाते भी हैं । इस समय दो अध्यापिकाएं हैं । श्रीमती सूरज देवी ब्रह्मचारिणी और श्रीमती इन्द्रा देवी जी। सूरज देवी सिद्धान्त कौमुदी पढ़ी हुई हैं और इन्द्रा देवी जी हिन्दी की हाई प्रोफिशिएन्सी और मैट्रिक पास हैं । और गायन कला में सिद्ध हैं। कन्याओं का रहन सहन बहुत सादा है । माई जी की सहायता से लड़कियां अपने भोजन इत्यादि का सब प्रबन्ध आप ही करती हैं: नौकर कोई नहीं है । इसके अतिरिक्त अपनी फूल वाटिका लगाना, उसमें जल सींचना इत्यादि आप करती हैं । वस्त्रों में विशेषतः खद्दर का प्रयोग होता है ।

पढ़ाई ।

भाषा संस्कृत, हिसाब, और अंगरेजी पढ़ाई जाती हैं । इसके अतिरिक्त भोजन बनाना, सीना, सलाई का काम और गाना सिखाया जाता है । धार्मिक शिक्षा में गीता, रामायण, उपनिषद्, वेदों के मंत्र, इतिहास

सब ही विषय पढ़ाए जाते हैं। लेख लिखना और व्याख्यान देना भी सिखाया जाता है।

जीवन इतना नियम बद्ध है कि प्रातः काल से सोने के समय तक सन्ध्या, प्रार्थना, पढ़ना, काम करना, और सत्संग करना सब काम समय में होता रहता है। पढ़ने वाले और पढ़ाने वालों का समय विभाग प्रायः एक ही है। इस समय पाठशाला में कई प्रतिष्ठित घरानों की कन्याएं शिक्षा पा रही हैं जैसे सेठ जमनालाल जी बजाज वर्धा, भक्त नन्दकिशोर जी दादरी, रायबहादुर बलबीरसिंह जी, बख्शी चानन शाह जी इन्कम टैक्स आफीसर दिल्ली, ला० नूनकरण दासजी भिवानी, सेठरामकृष्ण दास डालमिया चिड़ावा इत्यादि। एक कन्या का मासिक खर्च सात या आठ रुपया लगता है॥

आश्रम समाचार।

इस मास में सर्दी कुछ अधिक पड़ी परन्तु आश्रम वासियों का स्वास्थ्य अच्छा रहा। सेठ राम कृष्ण दास डालमिया चिड़ावा ने अपनी पुत्री को कन्या पाठशाला में दाखिल किया और भण्डारा दिया जिसमें सब आश्रम वासियों ने और पाठशालाओं ने प्रेम से भोजन किया। दूसरा भण्डारा पं० बनवारी लाल भार्गव रेवाड़ी ने किया जिस में आश्रम वासियों और पाठशालाओं के अतिरिक्त रेवाड़ी से कुछ आश्रम प्रेमी सज्जन भी सम्मिलित हुए थे। निम्न लिखित प्रतिष्ठित सज्जन दर्शक रूप में आश्रम में पधारे॥

१. सेठ रामकृष्ण दास डालमिया चिड़ावा.

२. पं० कन्हैयालाल वैद्य चिड़ावा.

३. आनरेबिल चौ० छोटूराम वज़ीर शिक्षा विभाग पञ्जाब.

४. कप्तान दलपत सिंह ए. डी. सी. वायसराय

५. लेफ्टिनेन्ट शिवलाल रियासत जींद.

६. चौ० बाबूराम डिप्टी कलक्टर पेहा.

७. मि० आर. सी. रैली डाइरेक्टर शिल्प विभाग पञ्जाब।

८. चौ० फूलसिंह वानप्रस्थी मैनेजर गुरुकुल भैंसवाल रोहतक.

९. सरदार चन्दासिंह इन्कम टैक्स अफसर रोहतक.

१०. सरदार गोपाल सिंह असिस्टेंट रजिस्ट्रार गुड़गांवा.

आश्रम से कुछ ब्रह्मचारी और कन्याएं चरखी दादरी की सेवा समिति के उत्सव पर गई थीं। वहां स्त्री समाज का भी उत्सव था। वहां श्रीमती सूरज देवी और इन्द्रो देवी व कन्याओं ने व्याख्यान दिये। सूरज देवी और इन्द्रो देवी के व्याख्यानों का लोगों पर बड़ा प्रभाव पड़ा सब लोग एक स्वर से प्रशंसा करने लगे। छोटी कन्याओं के भजन और व्याख्यान सुन कर तो लोग बहुत ही आनन्दित

हुए। ब्रह्मचारी लक्ष्मण देव व नरेन्द्र के भजन लोगों को बहुत पसन्द आए ॥

प्रभु का सन्देश ।

(ले० डॉ० पद्म वास्वानी)

श्री कृष्ण का कहना है—जीवन स्वप्नवत नहीं यह सत्य है कि हम और आप यहां पर थोड़े ही समय के लिये रहते हैं परन्तु ये थोड़े से ही दिन बड़े पवित्र दिवस हैं, इन थोड़े से दिवसों का महत्व है और हमें अपना कार्य करने की आवश्यकता है। जीवन स्वप्नवत है भारत वर्ष में इस विचार की खूब वृद्धि हुई है। पश्चिम में दूसरे ही प्रकार के विचार की उन्नति हुई। यूरोप और अमेरिका वासी मुझसे कहते हैं जीवन भोग है, यहां हम कहते हैं जीवन कुछ नहीं है वहां वे कहते हैं जीवन ही सब कुछ है—तब प्रश्न होता है—आत्मदर्शन स्वबोध के क्या अर्थ ? वे कहते हैं—आनन्द की प्राप्ति—खूब मौज उड़ाओ सारे आनन्द का रस आस्वादन करो इसी को मैं भोगवाद कहता हूं। अमेरिका और यूरोप में वे क्या चाहते हैं पैसा पैदा करो और आनन्द मनाओ अच्छा बड़ा मकान बनाओ आनन्द भोगने के लिये, मोटरकार रक्खो आनन्द लूटने के लिये। यदि एक ओर जीवन निस्सार है तो दूसरी ओर जीवन ही सार है। श्रीकृष्ण का संदेश एक दम निराला है और वह यह है—जीवन—धर्म—है जीवन न तो स्वप्न है और न भोग ही है वह तो धर्म है। जीवन है क्या ? इसका उत्तर गीता के सबसे पहिले शब्द में ही रक्खा हुआ है। आप लोग गीता के प्रारम्भिक शब्द जानते होंगे—धर्म क्षेत्रे, कुरुक्षेत्रे—गीता का सबसे प्रथम ही शब्द 'धर्म' तुम्हें गीता ग्रन्थ के मूल प्रतिपादित विषय का भली भांति परिचय दे रहा है। श्रीकृष्ण के इस महान संदेश का मूलाधार है 'धर्म'—जीवन धर्म क्षेत्र है। जीवन का अर्थ धर्म की युद्ध भूमि है, न कि स्वार्थ-परता जिसे पश्चिमीय अर्थशास्त्र प्रतियोगिता के नाम से पुकारते हैं—नहीं, इसे जीवन नहीं कहते। जीवन युद्ध क्षेत्र है परन्तु स्वार्थ परता का नहीं, वह धर्म का युद्ध क्षेत्र है। पुस्तकों में जो कुछ लिखा गया है वह तुम्हें स्मरण होगा। हमें गीता में बतलाया गया है कि प्रभु अपना रथ दोनों सेनाओं के मध्य में लेजाकर खड़ा करते हैं और तब वे अपना वह संदेश सुनाते हैं जिसे तुम गीता के नाम से पुकारते हो। यह संदेश प्रभु द्वारा रथ पर से सुनाया जाता है जो कि दोनों सेनाओं के बीच खड़ा किया जाता है जिसका कि मेरे हृदय में बड़ा भारी महत्व है। क्यों, यदि तुम्हें अपने जीवन में धर्म का पालन करना है तब तुम्हें भी अपना रथ दुःख और सुख के बीच में से होकर निकालना पड़ेगा। तुम्हें आपत्ती से डरना न चाहिये यदि तुम धर्म का पालन कर रहे हो। तुम्हें ज्ञात है शिक्षा किसे दी जा रही है। प्रभु की शिक्षा अर्जुन के प्रति है। और मैंने

कई बार विचार किया है कि अर्जुन भारत वर्ष का ही स्थानापन्न है। वह भारत नहीं जो कि अपने गौरव के समय था परन्तु वह भारत जो कि अपनी अवनति की दशा में था और वह भारत जो कि आज दृष्टि गोचर हो रहा है। अर्जुन यथार्थ भारत-वर्तमान भारत का स्थानापन्न है। क्योंकि अर्जुन के व्यक्तित्व का विश्लेषण करो।

तुम्हें क्या मिलता है? अर्जुन उद्वेग और आवेश का मूर्तिमान चित्र है और तुम्हें मालूम है कि प्रत्येक भारतवासी साधारणतया उद्वेग और आवेश में भरा रहता है। किसी खास कर आवेश युक्त होता है। अर्जुन में आवेश है परन्तु जब कार्य करने का समय आता है तब अर्जुन कहता है 'मैं नहीं लड़ूंगा' और यह साधारणतया प्रत्येक भारत वासी में पाया जाता है। उसमें आवेश की मात्रा बहुत अधिक है परन्तु कर्तव्य क्षेत्र में वह बिल्कुल क्षीण प्रतीत होता है। हमारे यहां वार्षिकोत्सव होते हैं, जल्से होते हैं और उत्सव होते हैं। मुझे विदित है वार्षिकोत्सव के अवसर पर बहुत उत्साह प्रगट किया जाता है। झंडियां, जुलूस, भजन, व्याख्यान, कीर्तन आदि सभी कुछ रहते हैं, समस्या कविता तथा उपदेश आदि होते हैं और जनसमूह भी यथेष्ठ रहता है। वे कहते हैं उत्सव समारोह से होने वाला है परन्तु उत्सव के पश्चात् पूरी शांति रहती है। उत्सव के पश्चात् हम कोई काम नहीं करते। क्या तुम समझते हो जल्सों का यही उद्देश होना चाहिये? जल्सा उत्सव अथवा वार्षिकोत्सव से तो कार्यारंभ किया जाता है। परन्तु हमारे साथ तो जो कुछ कार्य है वह केवल जल्सा, उत्सव अथवा वार्षिकोत्सव ही है। बस इनका मना लेना ही हमारा संपूर्ण कर्म है। हम समझते हैं यदि वार्षिकोत्सव उत्साह पूर्वक मना लिया गया तो हमने बहुत कुछ कर्म कर लिया। वार्षिकोत्सव कोई कर्म नहीं है। वार्षिकोत्सव तो यथार्थ में हमें साल भर तक काम करने के लिये उत्साहित और प्रेरित प्राप्त करने वाला एक साधन मात्र है। फिर भी मुझे कई समाजों के बारे में मालूम है जो कि साल तक कुछ भी नहीं करतीं परन्तु उत्सव के दो तीन सप्ताह से पहिले अपनी कुम्भकर्णी निद्रा से जाग पड़ती हैं। और तब वार्षिकोत्सव सम्बन्धी प्रबन्ध में लग जाती हैं। इस प्रकार की कार्य शैली कर्म करने का ढंग हमारी असमर्थता प्रगट करता है। वह यह प्रगट करता है कि हम भारत वासी अर्जुन के सरीखे आवेश में भर आने वाले हैं परन्तु हमसे कोई कर्म न बन पड़ेगा। और तुम जानते हो कि श्रीकृष्ण इस प्रकार के अर्जुन के उद्वेग और उत्साह को धिक्कारते हैं। श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं 'यह तुम्हारी कायरता है' इस प्रकार उद्वेग और उत्साह में भर जाना केवल कायरता दिखलाता

है। हमें कार्य करना चाहिये। और जो संदेश 'प्रभु' ने अर्जुन को सुनाया है उसी संदेश की आज हमें और तुम्हें आवश्यकता है। उसका अर्जुन के प्रति कहना है 'उत्तिष्ठ' उठो ! 'खड़े हो जाओ' यह समय नहीं है कि केवल उन्माद में भरे बैठे रहो' 'ऐ अर्जुन ! उठो, उठकर खड़े हो जाओ (और बनो-) कायर बने मत बैठे रहो। मैं अपने देश बन्धुओं से कहता हूं— कर्म करो, कुछ काम करो'।

धर्म पर बलिदान

अतिप्राचीन वैदिक धर्म और हिन्दू-जाति का इतिहास इस प्रकार की वीर गति प्राप्त करने वाले नर रत्नों से भरा पड़ा है जैसी कि:—

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी को प्राप्त हुई है। धर्म का प्रचार करने वाले, परमात्मा पर विश्वास रखने वाले और आत्मा को अजर अमर मानने वाले महान् पुरुषों का आचरण ऐसा ही होता है। स्वर्गीय श्री० स्वामी जी आश्रम में पधारे थे। उन्होंने यहां की कन्या पाठशाला देख कर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और सब कन्याओं को आशीर्वाद दिया आप यहां की अछूत पाठशाला और औषधालय को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए और जब आप को विदित हुआ कि अछूत पाठशाला और औषधालय की चिकित्सा मास्टर मोहनलाल जी ने बनवाई है तो उनको बड़ा हर्ष हुआ था और कहा था कि यह उन्होंने बड़े परोपकार का कार्य किया है। जिस कायर पुरुष ने यह काम किया है (वह अज्ञानी व नास्तिक इस घृणा युक्त पापाचरण को करके परमात्मा के अत्यंत कोप का भाजन हुआ है। हिन्दुओं को सचेत होकर सत्य सनातन धर्म का प्रचार करना चाहिए और अपने देश में रहने वाले उन लोगों को सत् मार्ग दिखाना चाहिए जो अपने अज्ञान और अन्ध विश्वास के कारण अधर्म को धर्म समझ कर अपनी आत्मा का हनन करके नर्कगामी बनते हैं और देश अशान्ति व उपद्रव के कारण होकर सब को दुःखी बनाते हैं। जब तक देश में ऐसे विचारों की बाहुल्यता रहेगी भारतवर्ष सभ्य देशों की गणना में नहीं आ सकता। हमारा तो श्री स्वामीजी को अपने बीच में न देख कर दुःखी व शोकातुर होना स्वाभाविक है परन्तु वह धर्म परायण, साहसी, धीर, वीर, उदार और सरल हृदय महात्मा वीर गति को प्राप्त होकर अपने परम प्यारे परमात्मा के पास चले गए जिस के प्रेम पर उन्होंने अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया था।

चन्द्रलोक पर गोली ।

आविष्कर्त्ता का पूर्ण उत्साह ॥

वायना १० नवम्बर । इस नगरमें विश्व-रुथान अन्वेषण कारिणी समिति पायी गयी है जिसमें अनेकों विज्ञानवेत्ता साम्मिलित होने-वाले हैं। अन्वेषण कर्त्ता डाक्टरफ्रैश्च हूफ की इच्छा चन्द्रलोक पर व्यवहारिक रूपमें राकेट द्वारा गोली चलानेकी है। इस राकेटमें मानवीय जीव नहीं रहेंगे, प्रत्युत १॥ से ६ किलो तक वैद्युतिक आलोक रहेगा जो ठीक ठीक हिसाब लगानेपर सूक्ष्म दर्शी टेलिसकोप द्वारा देखा जासकेगा । यदि नये चन्द्र अथवा अन्ध-कार मण्डल पर पड़े । कहा जाता है कि यह राकेट प्रति सेकण्ड ११ से भी अधिक किलो-मीटर की शक्तिसे चलेगा एक कोलीमीटर प्रायः १०९४ गजका होता है इस प्रकार राकेट की गति प्रति मिनट लगभग १२१०० गजकी होगी और इस गति से वह चन्द्रमा तक केवल ९७ घण्टे या इससे भी कम समय में ही पहुंच जायगा। इस "चन्द्रवैद्युतिक आलोक-राकेट,, का का वजन केवल ५ हण्डर होगा ।

अनुभव करने लिये जितने द्रव्य की आवश्कता होगी, वह इस समितिको ही व्यय करना होगा । यदि प्रथम प्रयाससे सफलता मिली तो पुनः अधिक उत्साह के साथ अनुभव करनेका विचार किया गया है ।

महा विचित्र आविष्कार ।

बहरे का स्वरूप आंखें सुनेंगी और कान देखेंगे।

गत १४ नवम्बरको इङ्गलेण्डन स्क्वायर के निकट गाइल्ड हाउसमें भाषण करते हुए डा० फानियर डी० आलबेने 'भविष्यद्र कान' दिखाया । यह एक यंत्र है जिसके द्वारा आवाज [ध्वनि] दृश्य हो जा सकती है । यह यन्त्र नये ढंगका है जिसमें एक पीतलका सालेण्डर, एक अबरखका पत्तर [जिसमें छोटासा शीशा लगा हुआ है] एक छोटा लैंस [जिससे बड़ी चीजें छोटी और छोटी चीजें बड़ी मालूम पड़ती हैं] और एक अबरखका रीड लगे हुए हैं । छोटा सीलेण्डर तथा रीड एक ही आवाज अथवा गान वाधका तत्काल ही अनुसरण कर सकें ।

इस तरहके यंत्रसे, जो शब्दों को पढ़ने योग्य रूपमें अंकित कर लेता है; बोले हुए शब्द अपने आप लिख जांयगे । तब तायपिस्त लेखककी आवश्यकता ही नहीं रहेगी । अन्धे आदमी बड़ी आसानीसे कानों द्वारा शब्दोंको देख सकते हैं । और डा० फार्नियरका कहना है कि पहरे एक या दो वर्षोंमें ही आंखसे सुनने लग जांयगे ।

आकाश के नक्षत्रों की गिनती ।

अमेरिका के प्रोफेसर फेडरिक एच सीआर्सने माउण्ट विलसन वैध शाला से तारे गिनने का कार्य समाप्त कर लिया । पहले अपने आकाश चौकोर भागों में बांट लिया और फिर इन्होंने आकाश के तारों का फोटो ले लिया । विलसन वैधशाला में जो दूरबीन है उससे सामान्य आंखकी रोशनी से ५०००० गुना अधिक दिखाती है आकाश के १३९ चौकोर फोटो समस्त आकाश का १२५०० भाग समझा गया । हिसाब लगाकर अनुमान किया गया है कि, आकाश में ३०००००००००० नक्षत्र हैं ।

विचित्र भूत लीला ।

हैदराबाद की खबर है कि नलगुण्डा जिले की पुलिस ने एक रहस्य मय घटना का समाचार दिया है । कहा जाता है कि भोंगीर के सागेदार के घर सन् १९२४ ई० में जो बच्चा पैदा हुआ था वह आकस्मात तीसरे दिन लापता होगया । बहुत तलाश किया पर कहीं पता न मिला । सन् १९२५ ई० में पिछली घटना के कारण और अधिक साव-धानी रखी गयी । पुलिस का इन्तजाम कर लिया था । पहला मकान भी छोड़ दिया गया था । पर पुलिस का इन्तजाम एक ओर धरा रह गया और बच्चा पांचवें दिन बिस्तर पर से गायब होगया । इस वर्ष और भी सावधानी रखी गयी थी । पुलिस के अतिरिक्त सारा गांव भी सावधान था । जिस घर में बच्चा था उसका ताला लगा दिया गया था, फिर भी बच्चा तालें मेंसे गायब हो गया । प्रसूता-गार में जो खिड़कियां थी सब बन्द थी उन्हों ने किसी को यह कहते हुए कि नू पैदाशार में सदा ले जाऊंगा सुना सागेदार बड़ा चिंतित है और किसी योग्य स्थान की तलाश में है ।

भजन ।

दाता एक राम भिखारी सारी दुनियाँ ॥टेक॥
राजा चढ़े रण घण दुर्जन धुनियां ।
समर समूह पै दौड़ और सुर मुनियां ॥१॥
चोर चाल चोरी करण ठग ठग ठगियां ।
साहूकार रोकड़ बांधे लाद चाले बनियां ॥२
जोगी जती जोग साधे जपे माला मनियां ।
अञ्जली पसार मांगे बडे ज्ञानी गुनियां ॥३॥
कोई नाचे गावे कोई तोड़े तान तनियाँ ।
भजन भरोसे भीखण दास उन मुनियाँ ॥४॥

भजन ।

भजन बिन बावरे तैंने हीरा सा जन्म गंवाया ॥टेक॥
कभी न आया सन्त शरण में, ना कभी हरि गुण गाया ।
बह बह मरा बैल की नांई सोय रहा उठ खाया ॥१॥
ये संसार, हाट बनिये की सब जग सौदा आया ॥
चातर माल चौगुना कीना मूरख मूल ठगाया ॥२॥
ये संसार फूल सेंमल का सुवा देख लुभाया ।
मारी चोंच कई निकस्याई मूण्डी धुन पछताया ॥३॥
ये संसार माया का लोभी ममता महल चिनाया ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो हाथ कछू ना आया ॥४॥

भजन ।

आया हूं शरण में नारायण मुझे मुक्ति का द्वार दिखाओ प्रभो
तुही तात मात परिवार तुही धन दौलत घर बार तुही ।
नहीं और कोई है सगा मेरा नय्या को पार लंघाओ प्रभो ॥
कभी करसे न पूजाकरी तेरी कानों से कथा न सुनी तेरी ।
नहीं तीर्थों में जाय करी फेरी जन जान के हाथ बढ़ाओ प्रभो ॥
भव सागर की कछु थाह नहीं कोई आता नजर मल्लाह नहीं ।
बिठा कर चरणों की जिहाज में भव पार मुझे पहुंचाओ प्रभो ॥
कर जोर राम की है बिनती मेरे पाप तो नाथ हैं अन गिनती ।
है नाम तिहारो पतित पावन निज नाम की लाज रखाओ प्रभो ॥



बिना गुरु के सिद्धान्त कौमुदी ।

भाषाफक्कि। प्रकाश।

इस पुस्तक में बहुत ही सरल भाषा में तथा प्रश्नोत्तर के रूप में सिद्धान्त कौमुदी की गूढ फक्किओं को समझाया है। विद्यार्थियों के बड़े लाभ की पुस्तक है इसमें विद्यार्थी लघु पढ़कर स्वयं सिद्धान्त कौमुदी पढ़ सकता है। मूल्य केवल ॥)

ज्ञान धर्मोपदेश ।

इस छोटी सी पुस्तक में वेद शास्त्र तथा धर्म का सार संगृहीत है और वेदान्त की उत्तम कविताओं का संगृह है। मूल्य -)॥

शब्द सदाचार सग्रह ।

इस में कबीर सूरदास आदि माहात्माओं की वाणियों का संगृह है। मूल्य -)।

वेदोपनिषद् ।

इस पुस्तक में ईश, कठ, मुण्डक, और माण्डूक्यादि उपनिषदों तथा वेदों के उत्तम २ मन्त्रों का अर्थ सहित संगृह है। मूल्य ।-)

अष्टोत्तरशत मन्त्रमाला ।

इस पुस्तक में गीता और उपनिषदों मे १०८ बहुत ही उत्तम श्लोकों का संगृह है। यह नित्य पाठ करने की पुस्तक है। मूल्य -)॥

भगवद्गीता का संस्कृत तथा भाषा टीका छप रहा है। मूल्य ॥=)

मैनेजर भक्ति प्रेस

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा (रेवाड़ी)

मुद्रक तथा प्रकाशक भूमानन्द ब्रह्मचारी "भक्ति प्रेस" आश्रम रामपुरा रेवाड़ी।